REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 12 | ISSUE - 9 | JUNE - 2023

राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में गणगौर पर्व

सीता गुर्जर[1] , डॉ. ऐश्वर्या भट्ट[2]
[1]शोधार्थी, मंच कला विभाग, वनस्थली विद्यापीठ.
[2]असिस्टेंट प्रोफेसर, मंच कला विभाग , वनस्थली विद्यापीठ, राज. (भारत)

भारतीय संस्कृति भारत राष्ट्र की एक विरासत हैं जिसकी प्रमुख विशेषताएं हैं प्राचीन धर्म एवं आध्यात्मवाद जो मानव की भौतिक प्रगति के साथ–साथ उसकी आध्यात्मिक प्रगति पर भी बल देती है। संस्कृति मनुष्य के जीवन और अस्तित्व को अधिक व्यापक और समृद्ध बनाती है। उसकी आध्यात्मिकता में वृद्धि करती है। सभ्यता और संस्कृति मनुष्य के सृजनात्मक क्रियाकलापों के परिणाम है। किसी भी देश की संस्कृति और परम्परायें उस देश के महान अतीत एवं समृद्ध संस्कृति की विरासत होती है जिनके माध्यम से उस देश के जीवन दर्शन का आभास होता है जैसे देवपरायणता, एकीकरण व समन्वय की भावना, भावनात्मक एकता इत्यादि।

गणगौर एक धार्मिक उत्सव मात्र नहीं है बल्कि एक प्राचीन परम्परा है। यह वसंत ऋतु का आकर्षक पर्व है। सर्दी की समाप्ति के बाद खुशनुमा हवा के झोंके हर प्राणी में नव संचेतना की लहर उड़ेल देते हैं। पेड़–पौधों में नई पतियाँ और कोंपल फूटने लगती है, पक्षी भी अपेक्षाकृत अधिक सक्रिय नजर आते हैं। यह आहट होती है और तभी से प्रारम्भ हो जाता है, वसंत आगमन उत्सवों और पर्वों का सिलसिला।

इसी बंसत के सुगंधित माहौल में गणगौर के त्यौंहार का विषे महत्व होता है। होली से पद्रंह दिन बाद चैत्र कृष्ण प्रतिपदा से गणगौर पूजा प्रारंभ होकर चैत्र शुक्ल तृतीया तक मनायी जाती है। चैत्र मास के तृतीया को पूरे राजस्थान में गणगौर का भव्य मेला लगता है जिसमें गौरी माता की सवारी निकाली जाती है स्त्री और पुरूष इस मेले में शामिल होते हैं।

गणगौर शब्द में गण यानी षिव जी और गौर यानी माता पार्वती की पूजा की जाती है। ये त्यौंहार पार्वती के गौने का सूचक है। प्रतिदिन प्रातःकाल में सौभाग्यवती स्त्रियाँ और कुँवारी लड़कियाँ इस त्यौंहार को असीम श्रृद्धा और निष्ठा से मनाती है। होली के तुरन्त बाद यह पर्व वास्तव में शुरू हो जाता है। होली की बची राख में महिलायें गेहूँ या जौ के बीज बोती है और उसे रोज सींचती है। बीज से जब पौधा प्रस्फुटित होता हैं, तो उसे सींचते हुए महिलायें गीत गाती है।

गीत–01

गौर गौर गणपति, ईसर पूजूं पार्वती
पार्वती का आला गीला, गौर का सोने का टीला
टीका दे टमका दे, बाला राणी बरत करां
करता करता, आर सायो बार आयो
किरो कांटो लाडू लायो, लाडू ने बीरे ने दी

बीरो म्हाने चून्दड़ दी, चूंदड म्हने सुहाग दियो, भाग दियो
सनमन सोळा ईसर भोळा, दोन्यूं जोड़ा जोड़ ज्वारा
राणी पूजे राज नै, म्हें पूजां सुहाग ने,
राणी को राज घटतो जाय, म्हाको सुहाग बढतो जाये
कीड़ी कीड़ी झाड़ दे, झाड़ दे गुंजाड़ दे
गुंजा थ्हारे पाणी , दे दे अंबा ताणी
ताणी में सिंघाड़ा, बाड़ी में बाजोड़ा
अब थ्हारो डांड, कटेली थ्हारो फूल[1]

होली के बाद कन्यायें समूह में बाग से पुष्प, दूब और छोटे बर्तन में जल लाती हैं। वे प्रायः चार या सात की पंक्ति में ऐसा करती है। बाग में कुएं के एक साफ कोने पर कुंकुम और अक्षत चढ़ाती है फिर गौर ईसर की प्रशंसा में गीत गाते हुए लौट जाती है और जब बाग में वह दूब लेने जाती है तो बाग के माली से प्रार्थना करते हुये गाती है–

गीत– 02

बाड़ी वाळा बाड़ी खोल मैं आया छां दोब लेबा
कुण की थे बेट्यां छो कुण की थे बहुआ छो
ईसर गौरां की बेट्यां छा ईसर गौरां की बहुआ छां
बाड़ी वाळा बाड़ी खोल मैं आया छां दोब लेबा
हरि हरि दोब सूं मैं पूंजला गणगौर [2]

अलग अलग क्षेत्रों में गणगौर का ये पर्व काफी उत्साह और धूमधाम के साथ मनाया जाता है। यह पर्व तो एक है मगर मनाने के तरीके क्षेत्रानुसार बदल जाते हैं। रात्रि तक सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम मची रहती है।

गणगौर के अवसर पर कई जगह भव्य मेलों का भी आयोजन किया जाता है क्योंकि मेलों में हमारे देश की संस्कृति झलकती है अतैव इतिहास में मेलों को काफी महत्व दिया गया है, इन्हें श्रद्धाभाव से मनाना चाहिए। झांकियों के आगे बैण्डबाजों की धुन पर महिलायें नृत्य करती है। मेले में लगे झूले, संगीत पार्टी, देहाती, लोक गायन का लोग भरपूर लुत्फ उठाते हैं।

जोधपुर, बीकानेर, उदयपुर, कोटा, अलवर तथा किशनगढ़ में सम्पन्न परिवारों द्वारा लकड़ी की मूर्तियों का पूजन किए जाने का रिवाज है। कई परिवार सदा इन्हें अपने घर में रखते हैं, पूजन से पूर्व कमरे की सफाई व सफेदी की जाती है। दीवार पर ईसर और गौरी के चित्र मांडे जाते हैं। चित्र में प्रायः उन्हें आमने–सामने बैठाकर चौपड़ खेलते दिखाया जाता है। इसके बाद गीत–संगीत के साथ पूजन किया जाता है।

बीकानेर में चैत्र माह में गुलाब के पुष्पों की आवक शुरू हो जाती हैं। वहाँ इसलिए महिलायें अपने पतियों की तुलना खिले गुलाबों से करती हैं। इस दिन महिलायें व्रत रखती हैं। देवी को प्रसाद चढ़ाती हैं। तीन दिनों तक कुँआरी कन्यायें समूह में एकत्रित होकर घुड़ला घुमाती हैं।

जयपुर में सिर्फ गौरी की प्रतिमा की सवारी निकाली जाती है। पहले ईसर की प्रतिमा भी साथ होती थी, लेकिन कहा जाता है कि एक बार किशनगढ़ नरेश ईसर की प्रतिमा को जबरन उठा ले गए थे, तब से केवल गौरी की प्रतिमा की ही सवारी निकाली जाने लगी। यहाँ इस अवसर पर पांरपरिक मिठाई गुणे और घेवर का बड़ा प्रचलन है गुणा एक पारम्परिक खाद्य व्यंजन है जो कि आटे और गुड़ से मिलकर बनाया जाता है गणगौर पूजन के समय इसका आदान–प्रदान किया जाता है।

सुहागिन महिलायें गणगोर पूजन के समय तले हुये गुणे को अपनी जोड़ी वाली महिला के साथ आठ बार आदान प्रदान करती है इस प्रकार सोलह तले हुये गुणों को सुहागिन महिलायें आपस में आदन प्रदान कर आठ गुणे गणगौर माता को भोग स्वरूप चढ़ाती है और आठ को स्वयं ग्रहण करती है और कुंवारी कन्यायें

बत्तीस बिना तले हुये गुणों को आपस में अपनी जोड़ी के साथ सोलह बार आदान प्रदान कर सोलह गुणे गणगौर माता को चढ़ाती है और बाकी सौलह गुणों को तेल में तलकर स्वयं ग्रहण करती है।

जोधपुर में इसे लोटिया के मेले के रूप में मनाये जाने की परम्परा है। सात चांदी या पीतल के लोटे एक दूसरे के ऊपर सजाकर सिर पर रखकर कुँआरी कन्यायें गीत गाती हैं, पूजन करती हैं विवाहित महिलायें दूब और पानी लेकर पूजन करती हैं और गीत गाती हैं। दोपहर में ईसर–गौर की सवारी निकाली जाती है।

उदयपुर में इस पर्व को बड़े पारम्परिक ढ़ंग से मनाए जाने का रिवाज था। कई दिनों पहले से इसकी तैयारियाँ राज परिवार में शुरू हो जाती थीं। नगाड़ों की आवाज के साथ सवारी चलती हुई झील तक आती थी। पूरे राजस्थान में गणगौर जयपुर और उदयपुर की काफी प्रसिद्ध है। कुँवारी कन्याओं और नवविवाहितों के लिए गणगौर के एक दिन पूर्व सिंजारा भेजा जाता है।

गणगौर के गीतों द्वारा राजस्थान के जीवन का रंगीन चित्रण दिखाई देता है। गणगौर के गीतों की धुन काफी मधुर होती है। एकलिंग जी के गढ़ की प्राचीरों से तोपों की आवाजों के साथ सवारी निकाली जाती थी बाद में प्रतिमाओं को झील में नौंका विहार कराया जाता था। कहा जाता है कि पुराने समय में उस दिन परनालों से शराब का भी मुफ्त वितरण किया जाता था और जन साधारण प्रसाद रूप में उसे ग्रहण करते थे।

सिरोही और माउन्ट आबू क्षेत्र में गरासिया आदिवासी इसे अपनी परम्परानुसार मानते हैं। यह अवसर आदिवासी युवक–युवतियों द्वारा स्वतंत्र रूप से जीवन साथी चुनने का भी होता है, जिसे उनका समाज मान्यता प्रदान करता हैं। **दौसा (लालसोट)** में इस अवसर पर हेला ख्याल गायकी दंगल आयोजित किया जाता है।

मेवाड़ में भी चैत्र शुक्ला तृतीया (तीज) को प्रथम प्रहर में गणगौर का उत्सव होता था जिससे शहर में बड़ी धूमधाम होती है। चैत्र कृष्णा वदी एकम से लेकर चैत्र सुदी शुक्ला तृतीया तक (अर्थात् 16 दिनों तक) गणगौर पर्व की धूम मची रहती हैं। यह पर्व राजस्थान की कई रियासतों व रजवाड़ों में भी धूमधाम से मनाया जाता रहा हैं। प्राप्त वृतान्तों के अनुसार चैत्र शुक्ला द्वितीया के दिन गणगौर का सिंझारा (दातनहेला) मानकर शहर की स्त्रियाँ अच्छे रंगों के कपड़े और गहने पहनकर बाग बावड़ियों में जाती थी और राज्य में भी उत्सव होता था। तीसरे पहर के वक्त पहला नक्कारा होता, आम जनता राह के दोनों ओर खड़े रहकर तथा अपने मकानों की छतों से यह दृश्य देखती थी और उसके बाद दूसरा नक्कारा होता और तीसरे नक्कारा बजने पर महाराणा सवार होते थे।

एकलिंग गढ़ से 19 या 21 तोपों की सलामी होती थी। सवारी महलों से रवाना होती तब सबके आगे निशान का हाथी रहता था उसके पीछे दूसरे हाथियों पर सरदार पासवान रानियों और अन्य खास लोगों के साथ चढ़े रहते थे फिर पलटन व जंगी रिशाला अपने अफसरों के आगे अंग्रेजी बाजा बजाता हुआ निकलता था जिसके पीछे ताम–झाम और खासा हाथी जिन पर सोने चाँदी के हौदे कसे हुए मिलते थे फिर राजकीय बड़े–बड़े प्रतिष्ठित लोग उमराव सरदार चारण, और अहलकार अच्छे घोड़ों पर चढ़े हुए आते थे। उनके पीछे खासा घोड़े झरी के सामान व सोने–चाँदी के गहनों से सजे हुए मुख्य घोड़ों के दोनों तरफ चंवर और मोरछल होते थे।

युवराज की सवारी में चलने की दो जगह होती यानि खासा हाथी, घोड़ों के आगे अथवा महाराजा के पैदल जलवे (जुलूस) के आगे अपनी राजसी पौशाक में अपने अश्व पर बैठे हुए सवारी का मध्य क्रम सम्हालते थे। युवराज के पीछे अर्दली के सिपाही व लवाजिमा के लोग होते इनमें रणककण का बाजा जिसका मधुर सुरिला स्वर आकर्षण का केन्द्र होता था। जिसके साथ बाँसुरी व तूरही वाले रहते थे उनके पीछे श्री महाराणा अच्छी पोशाक अमरशाही, अरसीशाही और स्वरूपशाही पगड़ियों में से एक किस्म की पगड़ी, जामा और डोडी धारण किये होते थे।

गीत–03

खोल ऐ गणगोर माताा खोल ऐ किवाड़ी
बाहर उभी छे थ्हारे पूजण वाली
पूजो ये पुजावां थ्हाने काई काई मांगे
लाड कंवर सो बीरो मांगा राई सी भौजाई

श्यामल रंग सो वर मांगा और अन धन रा भंडारा
खोल ऐ गणगोर माताा खोल ऐ किवाड़ी
बाहर उभी छ थ्हारे पूजण वाली[3]

भरतपुर में पिछले 100 सालों से चली आ रही परंपरा के तहत गणगौर महोत्सव की शोभायात्रा धूमधाम के साथ निकाली जाती है। इस यात्रा में भगवान गणेश, इसके बाद मयूर नृत्य के साथ भगवान कृष्ण की झाँकी इसके बाद हवन करते हुए माँ दुर्गा की झाँकी, खाटू श्याम जी की झाँकी और गणगौर की सवारी का दृष्य बहुत ही मनोरम लगता है। माँ गौरा को विशेष पोषाक पहनाई जाती है। भगवान शँकर के लिए विषेष पोषाक बनवाई जाती है।

महिलायें गीत गाती है तथा सामूहिक नृत्य भी करती है। सोलह दिवसीय गणगौर पर्व के दौरान विधि–विधान से ईसर–गौर को मनाने की लोक परम्परा विभिन्न शहरों व ग्रामीण क्षेत्रों में धुलंडी से जारी हो जाती है। विर्सजन के द्वारा इस पर्व का समापन किया जाता है। इस पूजा में कुँआरी कन्याओं के साथ सुहागिन महिलायें भी शामिल रहती है।

कुँआरी कन्याओं की कामना होती है की उन्हें सुयोग्य वर मिले, कन्यायें ईसर–गणगौर के रूप में सजकर बैंडबाजों की धुनों पर मनमोहक नृत्य भी करती है जबकि सुहागिन महिलाएँ पति की लम्बी आयु की कामना करती है। महिलाओं द्वारा सोलह श्रृंगार कर सोलह दिन तक मिट्टी से गणगौर माता की मूर्ति बनाकर विधि–विधान पूर्वक गणगौर माता की पूजा अर्चना की जाती है।

करौली में गणगोर पर्व पर महिलायें लांगुरिया नृत्य करती है और ईसर पार्वती के गीत–भजन गाती है। डीजे के साथ शोभायात्रा निकाली जाती है। महिलायें सज–धजकर नए वस्त्र पहनकर ईसर गणगौर की पूजा–अर्चना कर भगवान शिव–पार्वती की कथा सुनती है।
बगीचे में जाकर बालिकायें लोटे में पानी, दूब व फूल लाकर गणगौर माता के साथ ईश्वर पूजे पार्वती जैसे गणगौर के गीत गाकर गौरा व पार्वती की कहानी सुनकर दूल्हा–दुल्हन बन कर गणगौर माता का पूजन करती है।

इससे पूर्व घरों पर सुहागिन स्त्रियों व कन्याओं ने मिट्टी से बने ईसर गणगौर की दूब व पुष्पों से "गौरा री गौरा मैया खोल किबारी, आई तेरी बेटी पूजनहारी" गाते हुए पूजा अर्चना करती है। ईसर शिव का तथा गौरा या गणगौर माँ पार्वती का स्वरूप है। इनके पूजन के बाद इन्हें सरोवर के जल में विसर्जित किया जाता है।

राजशाही के जमाने से करौली में ये उत्सव बडे ही उत्साह व उमंग के साथ मनाया जाता रहा है। यह पर्व विशेष उमंग व उत्साह के साथ मनाया जात है और घर घर में ईसर गणगौर पूजे जाते हैं।

महिलायें इन त्योहारों को पूरे हर्षोल्लास से मना कर भारतीय संस्कृति की इस विरासत को सुरक्षित बना रही है। फूल और हरी–हरी दूब से गोरा जी की जोड़ी को सजाया जाता है और हल्दी मेहंदी काजल और सिंदूर से बिंदिया लगा कर अपने मायके तथा ससुराल में सुख शांति और समृद्धि के लिए माता गौरा से आशीर्वाद लिया जाता है।

संध्या को फिर लोक गीत गाये जाते हैं ओर देर सायं गणगौर को पानी पिलाकर विश्राम कराया जाता है इस प्रकार एक पखवाड़े से चल रहा गणगौर उत्सव का समापन ईसर गौरां के विसर्जन के साथ किया जाता है।

संदर्भ पुस्तकें

1. गीत – 01–सिंह, चंद्रमणि (जनवरी 2000), राजस्थान की सांस्कृतिक परंपरा, राजस्थान पत्रिका प्रकाषन, जयपुर, पृ. सं., 165
2. गीत – 02 वही, पृ. सं.,166
3. गीत –03 जयसिंह, नीरज (जून 2016), राजस्थान की सांस्कृतिक परंपरा, राजस्थान हिन्द्री ग्रंथ अकादमी, जयपुर, पृ. सं., 255
4. सिंह, चंद्रमणि (जनवरी 2000), राजस्थान की सांस्कृतिक परंपरा, राजस्थान पत्रिका प्रकाषन, जयपुर, पृ. सं., 167

5. राणावत, मनोहर सिंह (2006), मेवाड़ का सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, प्रताप शोध प्रतिष्ठान, उदयपुर, पृ. सं., 50
6. वही पृ. सं., 51
7. वही पृ. सं., 52
8. राणावत, मनोहर सिंह (2006), मेवाड़ का सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, प्रताप शोध प्रतिष्ठान, उदयपुर, पृ. सं., 50
9. दैनिक नवज्योति अखबार– 25 मार्च 2023, पृ. सं., 08